बूढ़ा नीच लकड़बग्घा

जैक प्रेलउत्सकी

चित्र: अर्नोल्ड लोबेल

हिंदी: इंदुजी

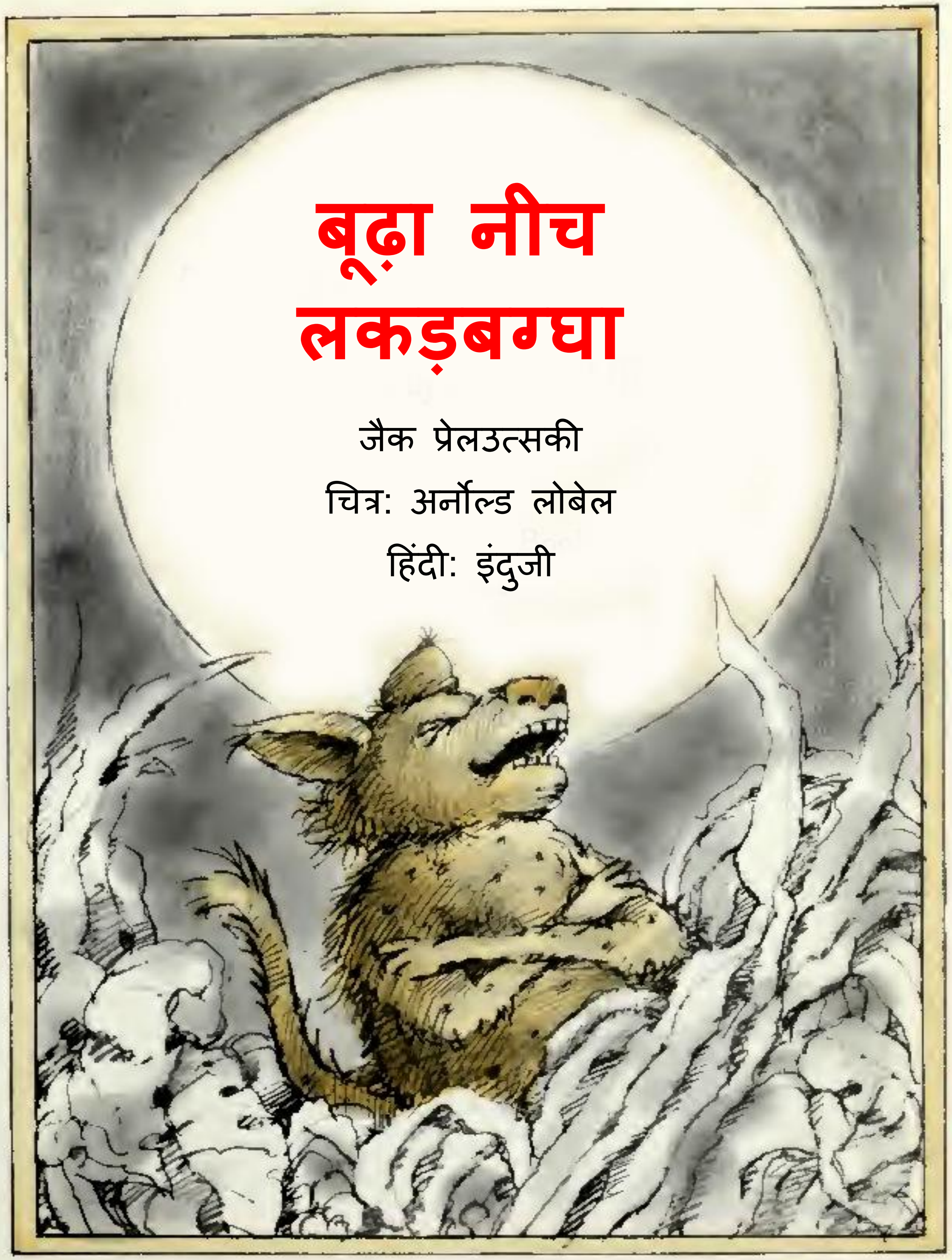


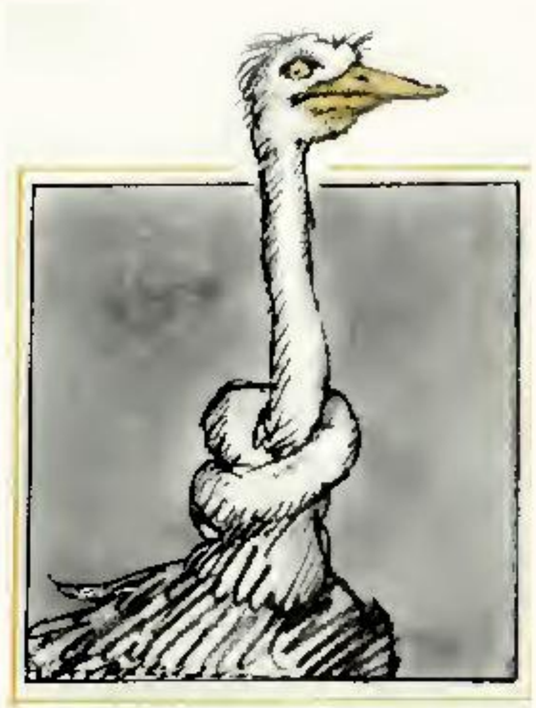
बूढ़ा नीच लकड़बग्घा

जैक प्रेलउत्सकी

चित्र: अर्नोल्ड लोबेल

हिंदी: इंदुजी







लकड़बग्घा आलसी था, दुबला-पतला था
वह डरपोक था, चालाक था और चिड़चिड़ा था.
वह कपटी था, धूर्त था और मक्कार था.
और ओह! वह बहुत ही नीच था.

झूठ बोलने में कोई उसका सानी न था
और हर दिन किसी न किसी को वह परेशान करता था
जंगल में भटकते हुए अपनी डरावनी आवाज़ में
वह अपना भद्दा गीत गाता रहता था.

"मैं हूँ बूढ़ा नीच लकड़बग्घा
मुझ सा नीच कोई और नहीं है
मैं ही हूँ सबसे नीच
इतना नीच जितना नीच आजतक कोई हुआ नहीं.
मैं हूँ सबसे घटिया लकड़बग्घा
घटिया से घटिया लकड़बग्घा
ओह! मुझसे आधा नीच लकड़बग्घा भी
मैंने आजतक खुद भी नहीं है देखा."

और इस तरह गाते हुए जब एक रात
वह जंगल के बीच से चल रहा था
उसे दिखाई दिया एक ज़ेबरा
जो सोया था गहरी नींद में.
“अह हा!” भद्दी हँसी हँसते हुए उसने कहा,
“क्या अवसर है!”

ज़ेबरा को देखते ही उसे मक्कारी सूझ गई थी.
“ही..ही...ही, कितनी मीठी नींद सो रहा है.
ओह! बहुत मज़ा आएगा,
ही..ही...ही, अभी कुछ देर में ही यह रो रहा होगा
जब वह देखेगा कि मैंने क्या कांड किया है.”





और जब ज़ेबरा गहरी नींद में सो रहा था
नीच लकड़बग्घा चुपके से उसके पास आया
और बिना आवाज़ किए, चांद की रोशनी में,
पेंट और ब्रश लेकर काम पर लग गया
झटपट उसने ब्रश को लहराया और
ज़ेबरा की धारियों को नया रुप दे दिया.

अपनी कारीगरी को देख कर
उसके होंठों पर एक कुटिल मुस्कान आ गई
फिर उसने चिल्लाकर ज़ेबरा के कान में कहा,
“उठो! उठो, भड़कीली बकरी और उठ कर देखो
मैंने तुम्हारी बदन की इन धारियों को
किस तरह का नया रुप दिया है!”

ज़ेबरा उठा और गुस्से से उछलने लगा.
“मेरी धारियाँ कहाँ हैं, किस ने मेरी धारियाँ गायब कर दीं?
ओह! किस ने किया यह? कौन है वह?”
नीच लकड़बग्घा हँसने लगा, “मैंने!”

ज़ेबरा किकियाया, “लकड़बग्घे... तुम ने!
तुम जो ऐसी मक्कारी करते हो, क्यों करते हो?”
लकड़बग्घा दांत निकाल कर हँसा, “ही..ही...ही
इसलिए क्योंकि मुझ सा नीच लकड़बग्घा कोई नहीं”





ज़ेबरा की हालत देख कर वह खिलखिला कर हँसा
और अँधेरे जंगल की ओर चल दिया.
"मैं हूँ बूढ़ा नीच लकड़बग्घा
मुझ सा नीच कोई और नहीं है
मैं ही हूँ सबसे नीच
इतना नीच जितना नीच आजतक कोई हुआ नहीं.

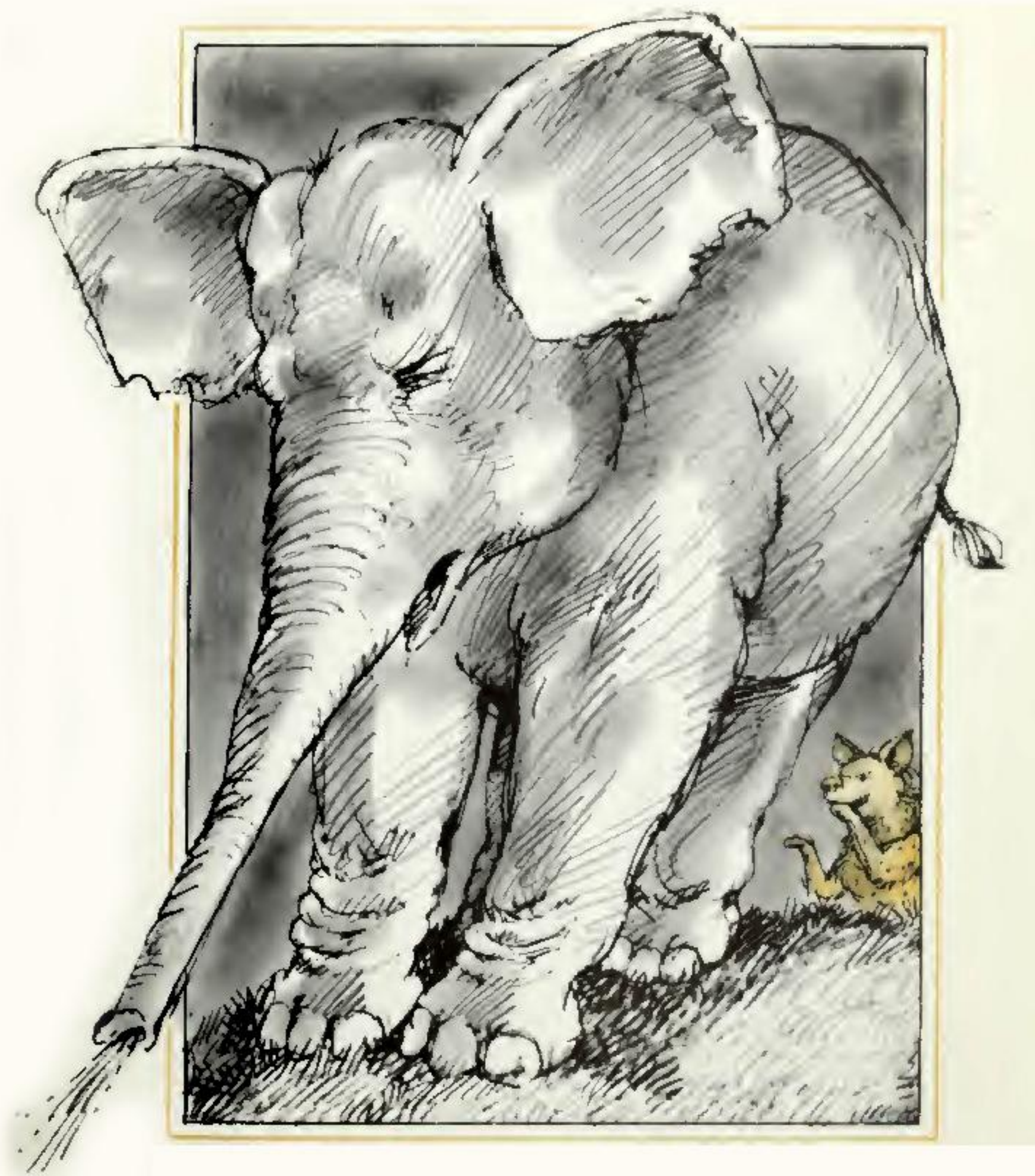
मैं हूँ सबसे घटिया लकड़बग्घा
घटिया से घटिया लकड़बग्घा
ओह! मुझसे आधा नीच लकड़बग्घा भी
मैंने आजतक खुद भी नहीं है देखा."

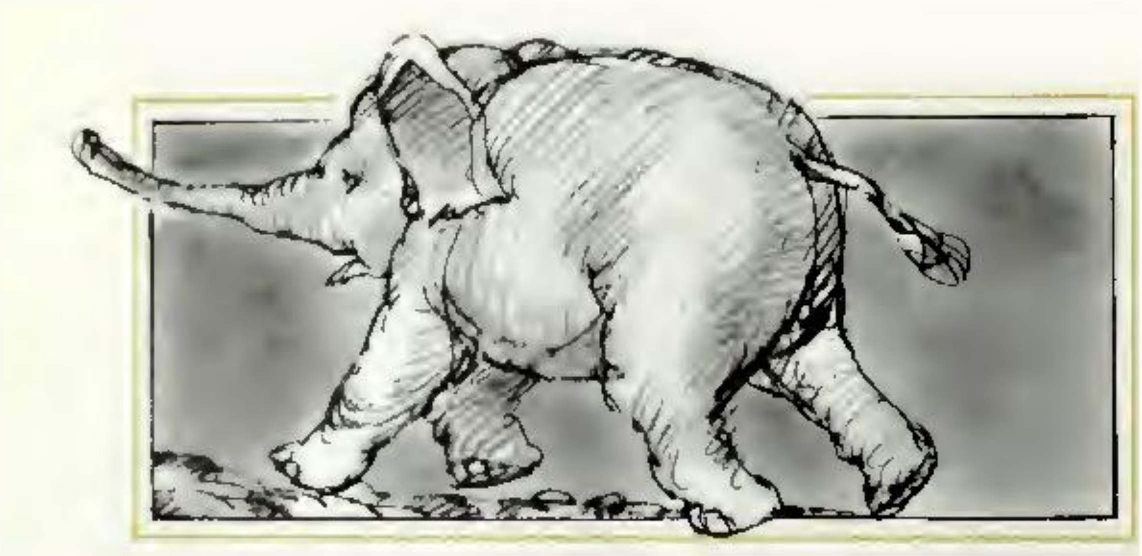


नीच लकड़बग्घा और हँसा
खूब ज़ोर से हँसा, मुँह खोल कर हँसा,
होंठ दबा कर हँसा.
“मुझे लगता है कि अभी और मज़ा आने वाला है
वहाँ उधर एक हाथी गहरी नींद सो रहा है.”

और जब हाथी गहरी नींद सो रहा था
लकड़बग्घा चुपके से उसके पास आ गया
और बड़ी चालाकी से दबे पांव
आ गया हाथी के शांत चेहरे के पास.

और जब वह पहुँच गया बिलकुल निकट उसने
उठा लिया घास का गुच्छा
और घुसेड़ दिया उस गुच्छे को हाथी की सूंड के अंदर.
हाथी अचानक उठा और लगा छींकने बिना रुके.”अहछू
कौन है? कौन है वहाँ? अरे नहीं, यह तुम हो!
यह क्या किया है तुमने? अह्...अहहहह......
अहहहहछूउउउउउउ!”





हाथी छींकता रहा, छींकता रहा और
छींकता रहा.
उसने खाँसी की और घरघराहट की
उसने फिर खाँसी की और ज़ोर-ज़ोर से सांस ली.
“लकड़बग्घे...तुमने...तुमने ऐसी
घटिया हरकत क्यों की? अह्...अह्ह्ह्ह......
अह्ह्ह्ह्छूउउउउउउ!”

नीच लकड़बग्घा दांत निकल कर हँसने लगा, “ही..ही...ही!
जितना नीच मैं हूँ उतना नीच कोई भी नहीं.”
छींकते और खाँसी करते हाथी को वहीं छोड़ कर लकड़बग्घा
चल दिया जंगल के बीच से
अपनी भद्दी आवाज़ में गाता अपना भद्दा गाना.

“मैं हूँ बूढ़ा नीच लकड़बग्घा
मुझ सा नीच कोई और नहीं है
मैं ही हूँ सबसे नीच
इतना नीच जितना नीच आजतक कोई हुआ नहीं.
मैं हूँ सबसे घटिया लकड़बग्घा
घटिया से घटिया लकड़बग्घा
ओह! मुझसे आधा नीच लकड़बग्घा भी
मैंने आजतक खुद भी नहीं है देखा.”



लकड़बग्घा चलता रहा और एक जगह उसे दिखाई दिया
एक शुतुरमुर्ग जो मज़े से गहरी नींद सो रहा था.
नीच लकड़बग्घा हँसा, “क्या मज़ा आएगा!
मुझे सूझ रही एक शरारत
ओह! मैं कितना बदमाश और घटिया हूँ
और मुझे एक शरारत सूझ रही है घटिया.”

और जब शुतुरमुर्ग जब गहरी नींद में था
नीच लकड़बग्घा आया उसके पास
बिना आवाज़ किए और झटपट उसकी गर्दन को
घुमा कर बाँध दिया धनुष समान.
और फिर उसने चिल्लाकर कहा,
“उठो, ओ बतख, अपने को सीधा करने की करो कोशिश.”

शुतुरमुर्ग नींद से उठा और ज़ोर से चिल्लाया,
“क्या किया है तुमने? मैं क्यों बँधा हूँ इस तरह?
ओ लकड़बग्घे, प्लीज़, मेरी गर्दन सीधी कर दो
मैं नहीं कर पा रहा सीधा इसे.”
नीच लकड़बग्घा हँसा, “अरे अगर ऐसा है तो
यह तुम्हारा दुर्भाग्य है, अब यही है तुम्हारी दशा.”





"मैं हूँ बूढ़ा नीच लकड़बग्घा
मुझ सा नीच कोई और नहीं है
मैं ही हूँ सबसे नीच
इतना नीच जितना नीच आजतक कोई हुआ नहीं.
मैं हूँ सबसे घटिया लकड़बग्घा
घटिया से घटिया लकड़बग्घा
ओह! मुझसे आधा नीच लकड़बग्घा भी
मैंने आजतक खुद भी नहीं है देखा."

शुतुरमुर्ग चिल्लाया, "क्या मुसीबत है,
क्यों करते हो तुम ऐसी गंदी हरकत?"
लकड़बग्घा हँसा, "ही..ही...ही!
जितना नीच हूँ मैं उतना नीच कोई भी नहीं."
शुतुरमुर्ग को उस हालत में छोड़कर
चल दिया लकड़बग्घा अंधेरे जंगल के अंदर.
मुसीबत में फंसे पक्षी के रोने की आवाज़ सुनकर
लगा गाने भद्दी आवाज़ में वह खुलकर.

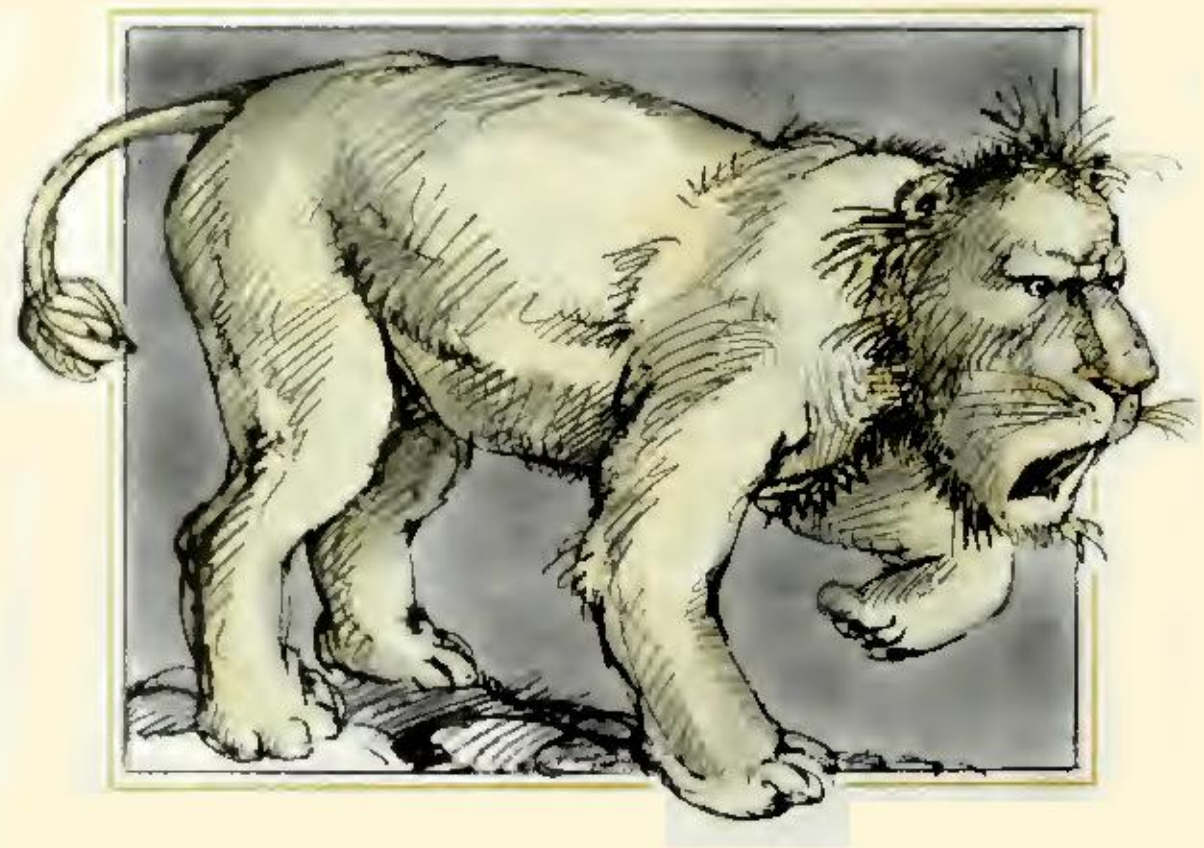


लकड़बग्घा घूमता रहा इधर-उधर
इक शेर की मांद के निकट पहुँच गया वह फिर.
“अह हा” वह हँसा. “क्या बात है!
बहुत बढ़िया!
इक और शरारत का अवसर है मिल गया,
मुझे लगता है मैं इसका हज्जाम बन सकता हूँ आज.”

और जब आराम से गहरी नींद में था शेर सोया
नीच लकड़बग्घा चुपके उसके पास आया
सोच कर मन में एक कपटी चाल
और चोरी से घुस गया शेर के घर
फिर कैंची और कंघा लेकर काट दिए
शेर की गर्दन और सिर के लहराते बाल.

नीच लकड़बग्घा फिर पीछे हटा
और ज़ोर-ज़ोर से, खूब ज़ोर से हँसने लगा.
वह उछला चिल्लाया, चिल्लाया उछला
“उठो ओ महाराज! उठो महाराज!”





शेर गुस्से से चिल्लाता उठ बैठा.
“ओह नहीं!” वह बोला. “मेरे बाल काट कर छोटे कर दिए,
नीच लकड़बग्घे अब तो तुमने हद कर दी है पार
देखो अब तुम्हारा क्या करता हूँ मैं हाल.”

“मैं तुम्हारे पंजे कुचल दूँगा,
मैं तुम्हारी जाँघें तोड़ दूँगा,
मैं तुम्हारी नाक चपटी कर दूँगा,
मैं तुम्हारी आँखों पर घूँसे मारूंगा,
मैं तुम्हारी पूँछ को मरोड़ डालूंगा
और हड्डियों के चबा जाऊँगा.”
शेर को गुस्से से चीखते-चिल्लाते देख
नीच लकड़बग्घा खुशी से हँसने लगा.

“वह सब तो ठीक है, महाराज,
लेकिन ऐसा सब करने से पहले
आपको मुझे पकड़ना भी होगा.”
नीच लकड़बग्घा ज़ोर से हँसा,
“ही..ही...ही!
जितना नीच हूँ मैं उतना नीच कोई भी नहीं.”



शेर गुस्से में खूब चिल्लाया
और नीच लकड़बग्घा उस पर खूब हँसा
और दोनों को पता ही न चला कि
शेर की मांद के बाहर हाथी आ खड़ा हुआ था.

लकड़बग्घा कुछ समझ न पाया
और आँख झपकने से पहले ही
हाथी ने लकड़बग्घे को सूंड़ में लपेट कर
ऊपर आकाश की ओर उठा लिया.

नीच लकड़बग्घा चिल्लाया,
“अरे! मुझे नीचे उतारो! अपनी थूथनी को सीधा करो!
मुझे छोड़ो, मैं कह रहा हूँ, मुझे छोड़ दो, छोड़ दो.”
हाथी छींकते हुए चिल्लाया, “मैं नहीं छोड़ूंगा.... ओह नहीं!
लकड़बग्घे....अहछुउउउउउउउउउ
मैं पकड़ कर रखूँगा तुम्हें
लकड़बग्घे....अहछुउउउउउउउउउ
तुम आखिरकार मेरी पकड़ में आए.”

ज़ेबरा और शुतुरमुर्ग ने जब सुनी
लकड़बग्घे की चीख-पुकार
ज़ेबरा और शुतुरमुर्ग
दौड़े आए देखने कि हुआ था क्या.
और जब उन्होंने देखा एक अजब दृश्य
वह दोनों हँसे और खूब हँसे इतना हँसें
कि फूल गई उनकी सांस.



ज़ेबरा चिल्लाया, “चलो इसको पीटें.”
शुतुरमुर्ग चीखा, “चलो इसको पटकें.”
सूंड सुड़कते हाथी बोला, “चलो इसको कूटें.”
शेर हाँफते हुए दहाड़ा, “चलो इसको खा जाएं.”

नीच लकड़बग्घा किकियाया, “अरे, दोस्तों,
मुझे कोई आपत्ति नहीं अगर तुम मुझे
कूटते हो या कोंचते या लतियाते हो
पर मेरा विश्वास करो अगर मुझे खाने लगे तो
मुझे तुम बिलकुल स्वादिष्ट न पाओगे.



“जो कुछ भी तुम करना चाहते हो करो
मारो, पीटो, पटको, कूटो
जो मन में आए वही करो
लेकिन इतनी विनती है मेरी
बस मुझे
गुदगुदी
बिलकुल न करना.”

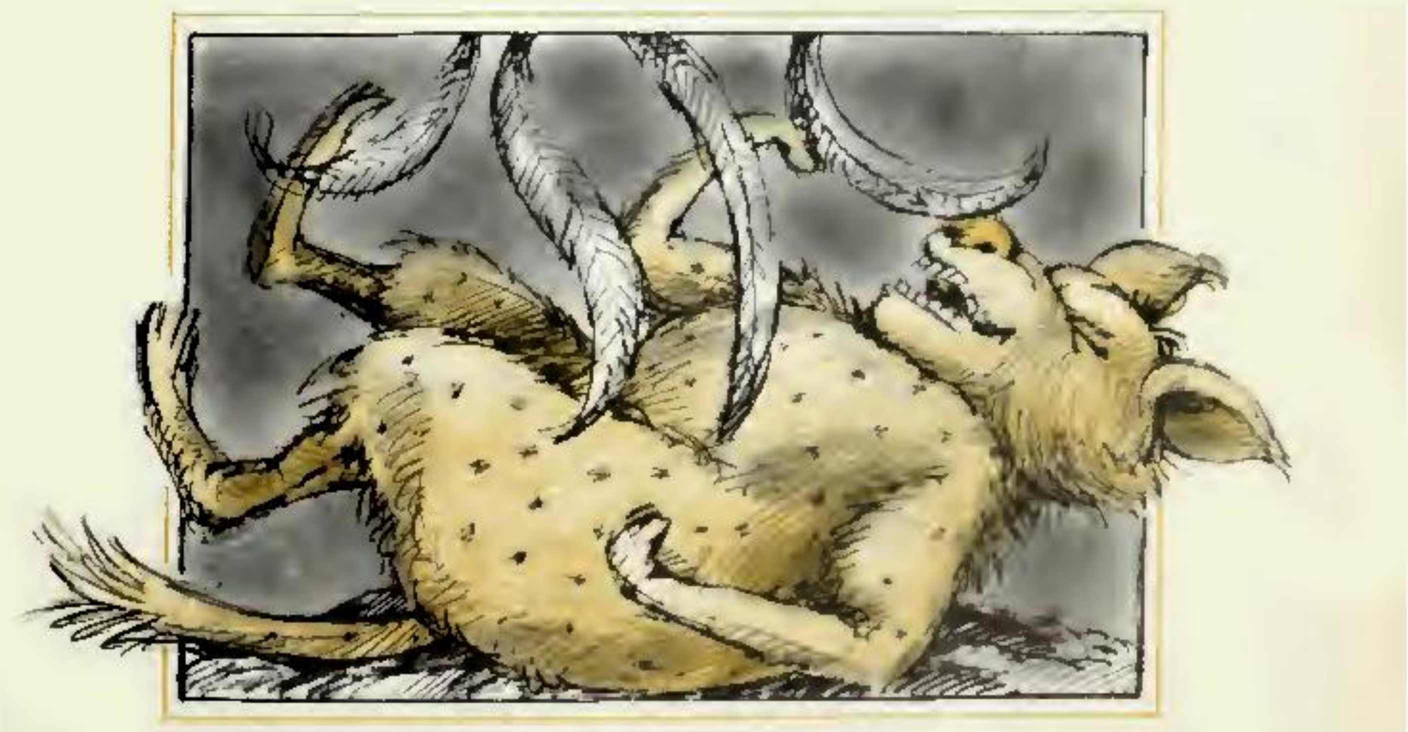


शेर दहाड़ा, “इसको अगर गुदगुदी लगती नहीं अच्छी और.
गुदगुदी से अगर इसे होती है परेशानी
तो मेरा विचार है कि
इसे करे हम बस गुदगुदी.”

ज़ेबरा और शुतुरमुर्ग और हाथी को
अच्छी लगी शेर की बात.
“हाँ, हाँ!” वह सब चिल्लाए एक साथ
“चलो करें इसे गुदगुदी.. शुरु हो जाओ सब एक साथ!”
शुतुरमुर्ग ने तब अपने पंख उखाड़ कर दिए सब को

और सब लगे करने उसे गुदगुदी.
उन्होंने उसके नाक में गुदगुदी की
उन्होंने उसके कान में गुदगुदी की
उन्होंने उसके तलवों में गुदगुदी की
और तबतक करते रहे वह गुदगुदी जबतक कि
हँसते-हँसते उसकी आँखों में आँसू नहीं आ गए.
उन्होंने उसके घुटनों पर गुदगुदी की
लकड़बग्घा चिल्लाता रहा,
“नहीं! और नहीं! प्लीज़!”

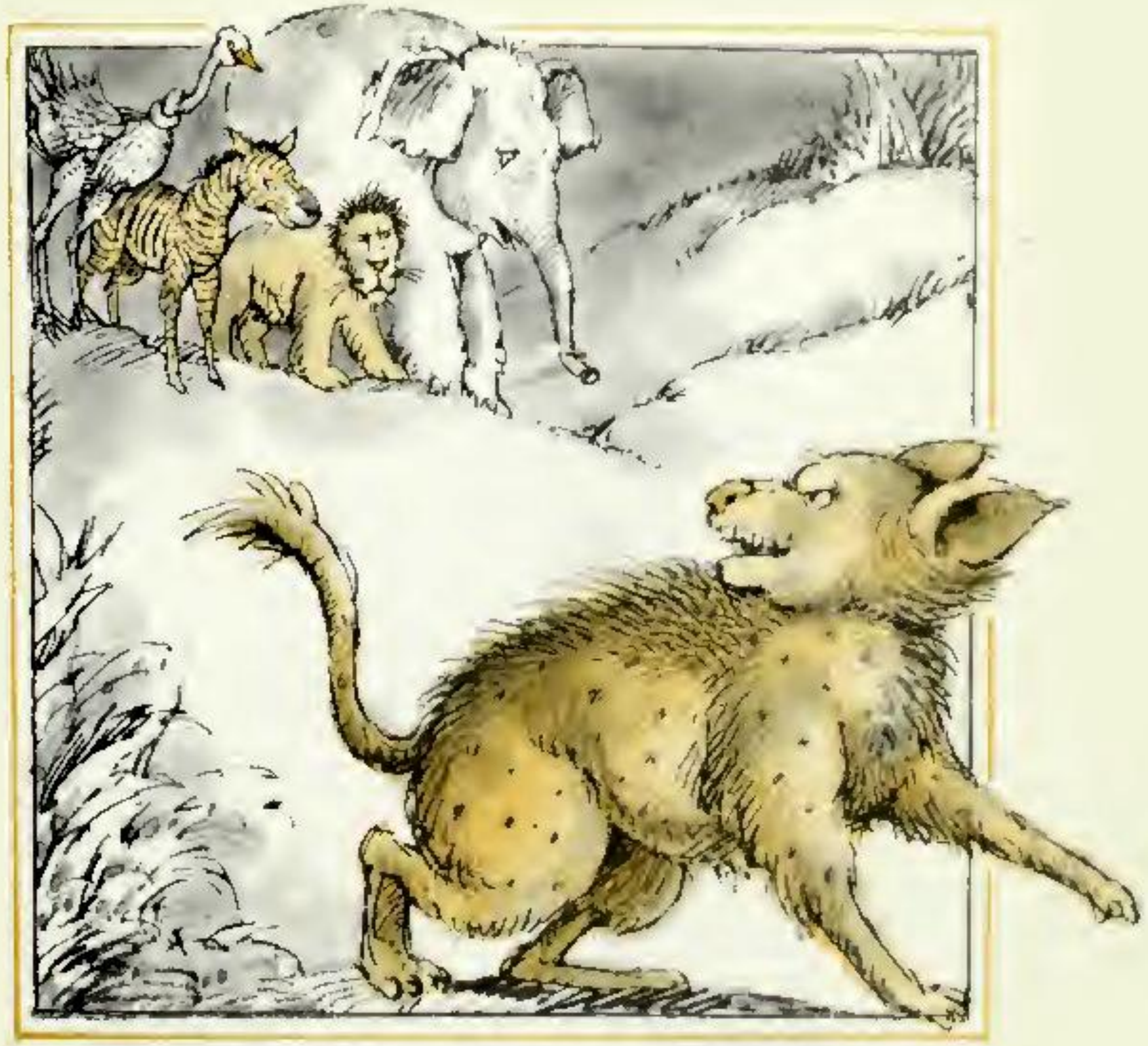
लेकिन वह उसे गुदगुदी करते रहे, करते रहे
और खूब गुदगुदी करते रहे.
उन्होंने उसे वहाँ गुदगुदी की
जहाँ पहले नहीं की थी.
उन्होंने ऊपर से नीचे तक गुदगुदी की,
यद्यपि लकड़बग्घा उनसे रुकने के लिए
करता रहा था विनती.



लेकिन वह उसे गुदगुदी करते रहे, करते रहे
और खूब गुदगुदी करते रहे.
जबतक कि गुदगुदी करने वाले चारों सब
गुदगुदी करते-करते थक नहीं गए.
"बहुत हो गया," शेर ने गरजती आवाज़ में कहा.
"मुझे विश्वास है कि अब यह पछता रहा है,
और मेरा विश्वास है कि अब यह सुधर जाएगा."
लकड़बग्घा झट से बोला, "अब मैं नीच लकड़बग्घा नहीं हूँ.
अब मैं सबसे अच्छा लकड़बग्घा हूँ, ऐसा जैसा कभी हुआ नहीं."

उन्होंने नीच लकड़बग्घे को छोड़ दिया,
और जैसे ही उन्होंने उसे छोड़ा वह सरपट दौड़ा,
लेकिन थोड़ी दूर जाकर
वह मुड़ा और ज़ोर-ज़ोर से हँसा.

"मैंने तुम सब को फिर से मूर्ख बनाया.
तुम सब हो कितने नादान.
तुम सब हो कितने भोले
कितनी सरलता से कर लिया मेरा विश्वास.
लेकिन मैं तो हूँ अब भी पूरा धूर्त और मक्कार



मैं हूँ चतुर, मैं हूँ चालाक
मैं हूँ धूर्त, मैं हूँ धोखेबाज़
मुझे अच्छा लगता है हँसना
ज़ोर-ज़ोर से खुलकर हँसना.
तुम्हारी गुदगुदी ने मुझे खूब हँसाया,
मुझको तो बस मज़ा ही आया!"

हंसते-हंसते भागा जब वो
तब चारों के मुँह तब लटक गए.
और उन्हें सुनाई दिया उसका गाना
गा रहा था वह फिर से अपना भद्दा गाना.

“मैं हूँ बूढ़ा नीच लकड़बग्घा
मुझ सा नीच कोई और नहीं है
मैं ही हूँ सबसे नीच
इतना नीच जितना नीच आजतक कोई हुआ नहीं.
मैं हूँ सबसे घटिया लकड़बग्घा
घटिया से घटिया लकड़बग्घा
ओह! मुझसे आधा नीच लकड़बग्घा भी
मैंने आजतक खुद भी नहीं है देखा.”

